A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

संगीत की गायन शैलियों में शिव-शक्ति का संचरण

Dr. Deepti Bansal
Associate Professor, Department of Music (Vocal), Daulat Ram College, University of Delhi, Delhi

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Bansal, D. (2026). sangeet ki gayan shailiyon mein shiv-shakti ka sancharan. Swar Sindhu, 14(1), 100-104.

सार

शिव सृष्टि की अनादि चेतना है जो नाद के माध्यम से अनुभव की जा सकती है। नाद संगीत की आत्मा है। शिव के प्रथम डमरू वादन से माहेश्वर सूत्र का सूत्रपात हुआ जो संगीत के स्वरों और व्याकरण का आधार बना। संगीत उर्जा का एक प्रवाह है जो विभिन्न गायन शैलियों के माध्यम से प्रवाहित होता है। ये गायन शैलियाँ शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, भक्ति संगीत, लोक-संगीत, चित्रपट संगीत आदि वर्गों के अंतर्गत आती हैं। इन गायन शैलियों में राग, ताल, बंदिश और भाव के माध्यम से शिव-शक्ति का संचरण देखा जा सकता है। शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों में शिव-भाव दिखाई पड़ता है जैसे भैरव, शिवमत भैरव, केदार, शिवरंजनी आदि। ध्रुपद, ख़्याल, चैती, होरी, कजरी, लोक-गीत, भजन आदि अनेक शैलियाँ हैं जिनमें शिव से सम्बद्ध बंदिशों की रचना की गई है। हमारी संस्कृति, साहित्य और संगीत में शिव की व्यापकता दृष्टिगोचर होती है। श्रद्धा भाव से शिव का स्मरण करते हुए संगीत के माध्यम से शिव तत्व की अनुभूति संभव है।

मुख्य शब्द - शिव, संचरण, गायन, शास्त्रीय, लोक-गीत

प्रस्तावना -

शिव वह 'आदि तत्व' हैं जिनसे सृष्टि उत्पन्न होती है। उन्हें सृष्टि का मूल आधार, रचनाकार, पालक व संहारक सभी माना जाता है। सृष्टि के पूर्व न सत् (कारण) था और न असत् (कार्य)। केवल एक निर्विकार शिव ही विद्यमान थे। शिव की महिमा अपरम्पार है। उनके गुणों का वर्णन करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। श्री पुष्पदन्ताचार्य शिवमहिम्नः स्तोत्र में लिखते हैं -

"महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।

अथाववाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामवधिगृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः"।। [पृ. 22]

उपर्युक्त श्लोक का सार ये है कि भगवान् शंकर के स्वरूप और महिमा का सर्वथा वर्णन तो देवों की वाणी भी नहीं कर सकती। अनन्त शिव की शक्ति और तत्व को जो जितना समझ सके उसे उसके अनुरूप शिव की भक्ति करनी चाहिए।

संगीत के जन्म को लेकर अनेक मान्यताएँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि संगीत का जन्म ओम् अक्षर से हुआ है। यह एक संयुक्ताक्षर है जो अ, उ और म तीन ध्वनियों के मेल से बना है। इन ध्वनियों को ब्रह्मा (उत्पत्ति करने वाला), विष्णु (पालन करने वाला) और महेश (संहार करने वाला) माना गया है। यही ध्वनियाँ सभी शक्तियों की पुंज हैं और इन्हीं से सृष्टि की रचना हुई। सृष्टि के बाद अन्य ध्वनियाँ पैदा हुईं, ध्वनियों से स्वर और स्वरों से संगीत का जन्म हुआ। [जोशी, पृ. 12] धार्मिक दृष्टिकोण के अनुसार नारद मुनि द्वारा कठोर तपस्या करने पर शिव ने उनसे प्रसन्न होकर उन्हें संगीत सिखाया। तत्पश्चात् नारद मुनि ने स्वर्गलोक से पृथ्वी पर आकर तपस्वियों को संगीत का प्रशिक्षण दिया। [जोशी, पृ. 5] सुप्रसिद्ध विद्वान् दामोदर पंडित ने संगीत की उत्पत्ति पशु-पक्षियों के विभिन्न स्वरों द्वारा बताई है। मोर से षड्ज, चातक से ऋषभ, बकरे से गांधार, कौए से मध्यम, कोयल से पंचम, मेढक से धैवत और हाथी से निषाद स्वर की उत्पत्ति मानी गई है। [मिश्र, पृ. 267] मान्यताएँ चाहे जितनी हों, शिव का संगीत से गहरा संबंध है। कहा जाता है कि सष्टि के आरंभ में जब शिव ने डमरू बजाया तो उससे पाणिनी के 14 सूत्रों का सूत्रपात हुआ। इसे महेश्वर सूत्र कहा गया। शिव के प्रथम डमरू वादन से निशब्द अंतरिक्ष में शब्द बना। महेश्वर सूत्र से भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ निकलीं और संगीत का जन्म हुआ। भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में शंकर और पार्वती का नृत्य के सर्जक के रूप में उल्लेख किया है। इन्हें नटराज कहा जाता है। [मिश्र, पृ. 267] जब शिव ने नृत्य किया तो मुद्राएँ और नृत्य की विभिन्न शैलियाँ विकसित हुईं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

संगीत के विविध आयामों में शिव

संगीत जीवन के कण-कण में समाया है और शिव भी। संगीत में शुद्ध तथा कोमल मिलाकर कुल 12 स्वर होते हैं। उसी प्रकार शिव के भी 12 ज्योर्तिलिंग हैं क्रमशः श्री सोमनाथ (सौराष्ट्र), श्री माल्लकार्जुन (शैलगिरि पर्वत), श्री महाकालेश्वर (उज्जैन), ओंकारेश्वर और अमलेश्वर (मालवा प्रांत), श्री केदारनाथ (उत्तराखंड), श्री भीमशंकर (डाकिनी), श्री विश्वेश्वर (काशी), श्री त्र्यंबकेश्वर (महाराष्ट्र), श्री वैद्यनाथ (परली ग्राम), श्री नागेश्वर (दारूक वन), श्री रामेश्वरम् (रामेश्वरम्) और श्री घुश्मेश्वर (बेरूल गाँव) हैं। भारतीय संगीत के अंतर्गत कई वर्ग हैं जैसे - शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, भक्ति-संगीत, लोक-संगीत, चित्रपट-संगीत आदि। इन सभी वर्गों की गायन शैलियों में शिव का संरचण देखा जा सकता है। राग, ताल, बंदिश और भाव के रूप में इन शैलियों में शिव-शक्ति व्याप्त है। संगीत में स्वर और लय के योग से हम शिव तत्व का अनुभव कर सकते हैं।

शास्त्रीय संगीत

पौराणिक कथानुसार शिव के पाँच मुखों से विभिन्न रागों और वाद्यों की उत्पत्ति मानी गई है। कहा जाता है कि पार्वती जी की शयन मुद्रा को देखकर शिवजी ने अनेक अंग-प्रत्यंगों के आधार पर 'रूद्र-वीणा' बनाई और अपने पाँच मुखों से पाँच रागों की उत्पत्ति की। ये राग थे भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक और श्री। तत्पश्चात् छठा राग पार्वती जी के मुख से उत्पन्न हुआ। यह राग कौशिक कहलाया। [जोशी, पृ. 3] हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के ऐसे बहुत से राग हैं जो शिव से सम्बद्ध हैं। राग भैरव का संबंध शिव के भैरव अवतार से माना जाता है। राग भैरव एक प्राचीन राग है। शिव का गांभीर्य और शांत स्वरूप इसके स्वरों में झलकता है। यह राग भक्ति और शांत रस से परिपूर्ण है। शिव-भाव से सम्बद्ध और बहुत से राग हैं जैसे - शिवमत भैरव, शंकरा, शिवरंजनी, केदार, अहीर भैरव, मालकौंस आदि। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ताल का सीधा सम्बन्ध भी शिव से माना जाता है। शिव का ताण्डव नृत्य लय और ताल का सर्वोत्कृष्ट रूप है। नटराज के रूप में उनके एक हाथ में डमरू है जो ताल का प्रतीक है।

शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत अनेक गीत-विधाऐं आती हैं जैसे - ध्रुपद, धमार, ख़्याल, तराना, टप्पा, चतुरंग इत्यादि। इनमें से बहुत-सी विधाओं में शिव सम्बन्धित बंदिशें मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप राग भैरव में चौताल में निबद्ध एक ध्रुपद है -

"गंगाधर त्रिनयन सूल पानि, भस्म अंग नीलकंठ गौरी अरधांग

कर त्रिसूल गरे मुंड माल भाल चंद्र, मृत्युंजय भृंगी सोहे भूत संग"

[भातखण्डे, पृ. 267]

सुप्रसिद्ध ध्रुपद गायक गुन्देचा बंधु द्वारा राग अड़ाना में शिव का भाव लिए इस बंदिश को अत्यंत सुंदरता से प्रस्तुत किया गया है। राग अड़ाना की प्रकृति ओजपूर्ण है।

"शिव शिव शिव, शिव शिव शिव

शंकर आदि देव शंभु भोलानाथ, योगी महादेव"

प्रस्तुत बंदिश में शिव के प्रति एक भक्त की प्रबल पुकार नज़र आती है।

ख़्याल गायन शैली शास्त्रीय संगीत की सर्वाधिक प्रचलित शैली है। कई घरानेदार बंदिशों में शिव का संचरण दिखाई देता है। किराना घराने की एक प्रसिद्ध बंदिश है जो राग भटियार में है और एकताल में निबद्ध है। इस बंदिश में शिव के स्वरूप का वर्णन मिलता है -

"देवन पति महादेव, शंकर, मन भाए

शीश गंग और चन्द्र, डमरू हर बजाए

गले भुजंग, भस्म अंग, गौरी को रहे संग

मुंडन की माल सोहे, हर हर हर गाए"

शिव-शक्ति से प्रेरित हो कर सुप्रसिद्ध ठुमरी गायिका, विदुषी सविता देवी ने राग विभास में एक मध्यलय के ख्याल की रचना की थी। यह रचना झपताल में निबद्ध थी।

"शिव शिव नमो नाथ, पार्वती पतये

तीन नेत्र गंगाधर, भोला नाथ आए

बाघम्बर नागमाल हर हर हर गाए"

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अनेक रागों व तालों में हमें शिव से सम्बन्धित बंदिशें मिलती हैं। गायक कलाकार जब उन्हें अपनी कला-साधना और सृजनात्मकता के अनुसार प्रस्तुत करते हैं तो वे श्रोताओं के मध्य आनन्द का संचार करती हैं।

उपशास्त्रीय संगीत

शिव के मंगल स्वरुप से कोई भी गायन विधा अछूती नहीं रही है। होरी गायन विधा का गान फाल्गुन महीने में अधिक किया जाता है। श्रृंगार रस प्राधान्य इस गीत शैली में अधिकतर राधा-कृष्ण तथा राम-सीता के होली खेलने का वर्णन मिलता है। किंतु निम्नलिखित होरी में शिव के औघड़ रूप के दर्शन होते हैं। पंडित छन्नू लाल मिश्र द्वारा गाई ये शिव की होरी अपने आप में अनूठी है और दादरा ताल में निबद्ध है।

"खेलें मसाने में होरी दिगंबर खेलें मसाने में होरी

भूत पिशाच बटोरी दिगंबर, खेलें मसाने में होरी

नाचत गावत डमरू धारी, छोड़ें सर्प गरल पिचकारी

पीटें प्रेत थपोरी"

चैती गायन शैली चैत्र माह में गाई जाती है। यह महीना धार्मिक पर्वों से भी जुड़ा है। श्रीराम, श्रीकृष्ण और शिवजी से संबधित भी चैती गीत मिलते हैं। एक चैती गीत में शिव के ताण्डव-नृत्य का वर्णन किया गया है -

"भोला बाबा हे डमरू बजावे रामा

भूत पिसाच संग सब खेले

ताण्डव नाच दिखावे हे रामा" [जैन, पृ. 38]

कजरी वर्षा ऋतु में गाई जाने वाली उपशास्त्रीय संगीत-विधा है। कजरी गीतों में शिव-पार्वती से संबद्ध काव्य भी मिलता है। कहीं उनके प्रेम का वर्णन है तो कहीं पार्वती शिव से मायके जाने की ज़िद कर रही हैं, तो कहीं उन्हें भांग-धतूरा परोस रही हैं। प्रस्तुत कजरी भी शिव-पार्वती से संबद्ध है -

"सुनीला की सैंया मोरा जोगी भइला रे, हमहूँ जोगन होई जाए

जोगिया के माथे जटा गंगा रे, जोगिनि के हाथ में फूल" [देवी, सविता]

भक्ति-संगीत

शिव का अर्थ है 'मंगलमय' और 'कल्याणकारी'। भगवान् शिव को इष्ट के रूप में पूजना शैव परंपरा का प्रमुख आधार है। शिव की आराधना सहज और सरल है पर शिव तत्व गूढ़ है। शिव तत्व का अनुभव शांत, गंभीर और ओजपूर्ण संगीत से होता है। इसीलिए भक्ति-संगीत शिव की रचनाओं से ओत-प्रोत रहता है। शास्त्रीय भजन हों या पारंपरिक भजन या जागरण संगीत अथवा फ़िल्म संगीत, सभी में शिव की भक्ति समाई है। शिव का प्रभाव ऐसा है कि वह चहूँ ओर भक्ति रचनाओं में दिखाई देता है। म्यूजिक टुडे की भक्तिमाला एलबम में पं. राजन-साजन मिश्र, विदुषी श्रुति सदोलिकर, पं. उमाकांत एवं रमाकान्त गुन्देचा आदि द्वारा गाई गई शिव स्तुतियाँ निश्चित ही संगीत के माध्यम से शिव-शक्ति को जागृत करती हैं। पंडित राजन-साजन मिश्र द्वारा गाई भक्ति रचना - 'जय शिवशंकर, जय गंगाधर, करूणाकर करतार हरे' राग शंकरा में स्वरबद्ध है। विदुषी सविता देवी द्वारा गाया भजन - "शिव शिव के मन शरण हों, जब प्राण तन से निकले" मनुष्य द्वारा मुक्ति व मोक्ष प्राप्ति की इच्छा को दर्शाता है। भारत रत्न लता मंगेशकर का गाया निम्नलिखित भजन शिव के प्रति अत्यंत सुंदर भाव को दर्शाता है -

"ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः शिवाय

सांसों की सरगम पे, धड़कन ये दोहराए

ओऽम् नमः शिवाय, ओऽम् नमः शिवाय"

शिव सम्बन्धी अनेक मंत्रों को जप-ध्यान आदि हेतु संगीत में ढाला जाता है। ऐसे अनेक मंत्र हैं जैसे - मूल मंत्र - 'ऊँ नमः शिवाय', महामृत्युंजय मंत्र - 'ऊँ त्र्यंबकं यजामहे', रूद्र मंत्र - ऊँ नमो भगवते रूद्राय' आदि। संगीत के माध्यम से हम निराकार की असीम चेतना का अनुभव कर सकते हैं। रावण द्वारा रचित 'शिव तांडव स्तोत्र' भगवान् शिव की स्तुति में गाया जाने वाला एक अद्भुत स्तोत्र है। अनेक कलाकारों ने इस शक्तिशाली व ऊर्जा-युक्त स्तोत्र को संगीत के माध्यम से बखूबी गाया है। इसमें शिव की भव्यता का वर्णन किया गया है -

"जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।

डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं

चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्" [स्तोत्ररत्नावली, पृ. 33]

इसी प्रकार श्रीमत् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित 'शिव पंचाक्षर स्तोत्र', गोस्वामी तुलसीदास कृत 'श्रीरूद्राष्टकम्' और श्री महर्षि व्यास द्वारा रचित 'श्री विश्वनाथाष्टकम्' आदि स्तोत्र हैं जिनका प्रयोग संगीत जगत् द्वारा किया गया है।

लोक गीत

लोकगीतों में भी शिव की क्रीड़ाओं का वर्णन देखने को मिलता है। श्रावण मास में आने वाले झूला-तीज त्यौहार के अवसर पर गाने वाले गीतों में एक लोकप्रिय गीत है -

'शिव शंकर चले री कैलाश बुंदियां पड़ने लगीं

भोले बाबा चले री कैलाश बुंदियां पड़ने लगीं

गौरा जी ने बोई हरी-हरी मेहंदी, भोले बाबा ने बोई भांग'

यह गीत शिव के सहज, सरल स्वरूप को दर्शाता है। उत्तर प्रदेश के लोकगीतों में शिव को 'भोलेनाथ' और 'घुम्मकड़ जोगी' के रूप में चित्रित किया गया है। लोक-संस्कृति में शिव-पार्वती के विवाह व सांसारिक जीवन से जुड़े लोकगीत बहुत प्रसिद्ध हैं। अवधी लोकगीतों में भी शिवजी का फक्कड़ी स्वभाव परिलक्षित होता है।

"पुरूब नगरिया से आये सिउ जोगिया परबत डारे पड़ाव

जोगिया सिउ जी से बोले मैया मदागिन, सुनो जोगी अरज हमारी"

लोकगीतों में शिव की अनेक स्तुतियाँ और भजन भी मिलते हैं। निम्नलिखित भजन में शिव के प्रेम मग्न होकर नाचने का वर्णन है।

"डिमिक डिमिक डमरू कर बाजे

प्रेम मगन नाचे भोला, भोला

सिंधी नाद बजावत गावत

लटक रही बगली झोला, भोला"

सुप्रसिद्ध शास्त्रीय कलाकार पं. छन्नूलाल मिश्रा और लोक कलाकार सुश्री मैथिली ठाकुर ने इसे बखूबी राग मिश्र खमाज में प्रस्तुत किया है।

शिव के लोक-गीत व लोक-भजन भारत के अनेक प्रदेशों में प्रचलित हैं। हिमाचल प्रदेश में उन्हें 'बड़ा देव' के रूप में पूजा जाता है। बिहार में 'नचारी' नामक पारंपरिक लोक शैली में शिव-स्तुति की जाती है। नचारी शैली के गीतों का सृजन मैथिली क्षेत्र के महाकवि विद्यापति ने किया था। शिव की स्तुति के रूप में गाए जाने वाले इन गीतों में शिव से दुःखहरण की प्रार्थना की जाती है। उदाहरणार्थ -

"कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ

दुखहि जनम भेल दुखहि गमाएव

सुख सपनहुँ नहिं भेल, हे भोलानाथ"

उत्तराखंड में जागर शैली एक लोक-आध्यात्मिक परंपरा है। जागर का अर्थ है जागृत करना। इस शैली के माध्यम से शिव के विभिन्न रूपों और क्रीड़ाओं का वर्णन किया जाता है। यहाँ शिव को स्थानीय कुल देवता के रूप में पूजा जाता है और ढोल की थाप व डमरू की लय पर उन्हें जगाने के लिए भक्तिपूर्ण गीत गाए जाते हैं। उत्तर प्रदेश में सावन के महीने में कांवड यात्रा के दौरान शिव के भजन गाए जाते हैं। राजस्थान तथा महाराष्ट्र में भी शिव की भक्ति के गीत गाए जाते हैं। लोक-संगीत भारत की आत्मा है। इसके माध्यम से चहूँ ओर शिव-भाव मुखरित होता है।

चित्रपट संगीत

चित्रपट संगीत का जन सामान्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यह केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है अपितु इसमें भारतीय संस्कृति का प्रत्येक पहलू समाहित रहता है। चित्रपट संगीत के भक्ति गीतों की एक समृद्ध परम्परा रही है। शिव की शक्ति और भक्ति की अनेक सुंदर रचनाएँ फ़िल्मों में मिलती हैं। फ़िल्म केदारनाथ का गीत 'नमो नमो शंकरा' शिव की महिमा और आध्यात्मिक सत्य का अनुभव कराता है। ओ.एम.जी. 2 फ़िल्म का गीत 'ऊँची ऊंची वादी में वसते हैं भोले शंकर' और 'ब्रह्मास्त्र' फ़िल्म के 'देव देवा नमः नमो नमः' गीत ने लोगों के हृदय में अपनी एक पहचान बनाई है। सन् 1955 में रीलीज़ हुई फ़िल्म मुनीम जी में शिवरात्रि उत्सव को मनाता हुआ एक मधुर गीत आया था जो उस समय अत्यंत सराहा गया। वह गीत था - "शिवजी बिहाने चले पालकी सजाई के"। चित्रपट संगीत के माध्यम से हमें अनेक गीत मिले हैं जो शिव की महिमा और शक्ति से अवगत कराते हैं।

निष्कर्ष

हमारी संस्कृति, साहित्य और संगीत में शिव व्यापक रूप से समाये हुए हैं। शिव संगीत के पर्याय हैं और सृजनात्मकता के प्रतीक हैं। शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, भक्ति-संगीत, लोक-संगीत और चित्रपट-संगीत की रचनाओं के उपरोक्त अवलोकन से हम देख सकते हैं कि संगीत की विविध गायन शैलियों की बंदिशों में शिव की शक्ति निहित है। संगीत के विभिन्न रागों, तालों और भावों में शिव विद्यमान हैं। सृजन, संगीत का मूल तत्व है और शिव सृजनकर्ता हैं। शिव के डमरू से निकला महेश्वर सूत्र संगीत के स्वरों और व्याकरण का आधार है। शिव तत्व की प्राप्ति के लिए संगीत एक सशक्त माध्यम है। शिव के प्रति श्रद्धा और भक्ति हमें साधना के उस मार्ग की ओर ले जाती है जहाँ मुक्ति संभव है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Gundecha Brothers, Shiva Shiva Shiva, Dhrupad Mala Vol. 1, youtube@pareshadasa
2. जैन, डा. शान्ति, चैती (तृतीय संस्करण 2012), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 38.
3. जोशी, मंजरी, भारतीय संगीत की परम्परा (2012), नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, पृ. 6.
4. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास (1969), मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोज़ाबाद, आगरा, पृ. 12.
5. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास (1969), मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोज़ाबाद, आगरा, पृ. 5
6. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास (1969), मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोज़ाबाद, आगरा, पृ. 3.
7. देवी, सविता, ठुमरी गायिका से प्राप्त कजरी।
8. भातखण्डे, पंडित विष्णु नारायण, क्रमिक पुस्तक मालिका भाग-2 (1985), संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ. 226-227.
9. मिश्र, पंडित विजय शंकर, संगीत के इन्द्रधनुषी शिलालेख (2017), कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ. 267.
10. शिवताण्डवस्तोत्रम्, स्तोत्ररत्नावली, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ. 33.
11. शिवमहिम्नःस्तोत्रम्, स्तोत्ररत्नावली, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृ. 22.